भारत का प्रथम व्यंग्य चित्रकार

* डॉ. माधवी सिंह

गगनेन्द्रनाथ टैगोर उन कलाकारों में से है जिन्होंनें स्वयं बंगाल शैली का अनुसरण तो नहीं किया लेकिन अपनी स्वतंत्र चित्रशैली से बंगाल कलाशैली को अप्रत्याशित बल प्रदान किया। इनका जन्म 1867 में हुआ था। गगनेन्द्रनाथ रविन्द्रनाथ टैगोर के चचेरे भाई थे, गुनेन्द्रनाथ के सबसे बड़े पुत्र थे। इन्होंने कला की किसी से भी विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की न ही वे किसी शैली या कलावाद से जुड़े रहे। डॉ. आर.ए. अग्रवाल का विचार है ''कलकत्ता नगर व घर के सामने एक विशिष्ट कलात्मक वातावरण में रहते हुए भी इन्होंने अपनी निजी शैली का विकास किया और वह शैली इतनी अलग थी कि उन्हें बंगाल स्कूल के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता।'' उन्होंने नितान्त स्वतंत्र और सतत प्रयोगशील शौकिया कलाकार के रूप में कार्य किया, रेखाचित्रों में उनकी विशेष अभिरूचि थी और जापानी कलाकार याकोहामा व हिशिदा के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उन्होंने कला के क्षेत्र में पदार्पण किया। ये बहुमुखी कला के धनी थे, वो अनुरूपक नहीं थे पुनर्जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए गगनेन्द्रनाथ आधुनिक भारतीय कला के संकुचित कट्टरता से अलग रहे। वह हमेशा स्वतंत्र चित्रकार रहे सहजात सृजनाकांक्षा तो उनमें थी ही सुख–चैन, धन–वैभव और अवकाश ने कूंची और रंगों से मनमानी खिलवाड़ करने की उन्हें छूट दे दी। अपनी अंतर्नुभूतियों और मन की विचित्र झोंक को उन्होंने रहस्यपूर्ण रंगों में व्यक्त किया।

यद्यपि उनकी कला में कोई निश्चित तरतीब न थी, तथापि उनका चित्र– सृजन केवल रईसी विलास मात्र नहीं कहा जा सकता। एक प्रकार प्रखर चित्र सृष्टा होने के नाते कुछ निजी, कुछ पराया, कुछ नवीन, कुछ अनूठा देने की भावना और संकल्प था उनमें, वह पाश्चात्य तकनीक और भावधारा को अपनाकर पुरानी चिर–परिचित लीक से आगे बढ़ना चाहते थे। वह हर प्रकार के पूर्वी और पश्चिमी अन्धविश्वास से मुक्त थे। जब तक कोई उनके व्यंग्य चित्र सामाजिक संतुष्टि करते हुए भी उनकी विशेषता को नहीं पहचानता तब तक इस विख्यात कलाकार को नहीं समझ सकता, जिसके लिए सब आत्मनिष्ठ, व्यक्तिगत अनुभव था, जिसके लिए उसकी कलारूपी प्रेरणा में एक अजीब और स्वच्छलपूर्ण बुद्धि का समावेष था। उनके व्यंग्य चित्र अवश्य ही प्रभावोत्पादक रहे जिनके माध्यम से उन्होंने समाज की कुरीतियों, अंधविश्वासों और पूर्वाग्रहों की कुंठाओं पर प्रभावशाली आघात किया। भारतीय चित्रकला की सर्वांगीण उन्नति के लिए एक महाशक्ति के रूप में आचार्य गगनेन्द्रनाथ का अभ्युदय उस समय हुआ जबकि यहाँ चिर–सृजनाकांक्षा उन्मुक्त विचरण छोड़कर एक विदेशी कंचनकारा से आबद्ध हो चुकी थी। वर्तमान कलाधार का कोई ऐसा प्रमुख पक्ष नहीं था जिसका श्रीगणेश इस कला साधक के हाथों न हुआ हो। रेखाचित्रों की भाँति व्यंग्य चित्रों के प्रति गगन बाबू की अभिरूचि की कहानी अत्यन्त रोचक है। सन् 1906 में गगन बाबू को एक मुकद्में के सम्बन्ध में अदालत जाना पड़ा था जहाँ वह जजों, वकीलों व अभियुक्तों आदि के केरीकेचर और कार्टून बनाते रहते थे। इससे उन्होंने आगे चलकर व्यंग्य चित्रों का विकास किया। उनके व्यंग्य चित्र पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर अत्यन्त लोकप्रिय हुए। व्यंग्य चित्रो ंकी लोकप्रियता एवं माँग को देखते हुए केरीकेचर और कार्टून के तीन लीथोग्राफिक प्रेस पर छापकर तैयार किये गये उनके वह व्यंग्य चित्र देश की समसामयिक, आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक जीवन की विद्रुपता पर तीव्र कटाक्षों के लिए उल्लेखनीय बन पड़े, इसमें करूणा मिश्रित व्यंग्य का अपूर्ण चित्रण हुआ है। ''यूनिवर्सिटी प्रेस'' ऐसा ही उनका एक व्यंग्य चित्र है उनके व्यंग्य चित्र समसामयिक भारतीय चित्रकला के सर्वप्रथम प्रयास थे। गगनेन्द्रनाथ ने व्याख्याकार के रूप में सामयिक विषयों पर अपने कार्टूनों के माध्यम से वे उस मानसिक एवं नैतिक संकट की समझ की गहराई को प्रदर्शित करते है, जिसमें भारत फंसा हुआ था। वे इन कृतियों में एक कुशल कलामर्मज्ञ की असाधारण तकनीक की गुणवत्ता को प्रदर्शित करते है। मैं यहाँ उनके व्यंग्य चित्रों की उस श्रृंखला की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ जो कुछ पुस्तकों में हमारी शताब्दी के आरंभिक वर्षो में प्रकाशित हुई ''अवधूतलोक'' (1915) विरुप (1917) तथा रिफार्म स्क्रीम्स (1921) ये चित्रमंजूषायें अतिविरल हैं उनका प्रकाशन औसत मूल्य पर हुआ। शीघ्र ही वे खरीद लिये गये तथा प्राचीन काल की बंगाल की स्मृतियों के उपेक्षित स्थल में खो गये। मेरा विश्वास है कि वे केवल अपने युग के सामाजिक इतिहास के रूप में महत्त्वपूर्ण नहीं है वरन् आज भी है। रायकृष्णदास के अनुसार ''गगनेन्द्र बाबू के व्यक्ति चित्रों में जो करूणा ओत–प्रोत है उसका कारण है अपने देश की धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विपत्ति तथा अद्यपतन जिनसे प्रत्येक सहृदय विचलित हो उठता है।'' भारतीय कलामर्मज्ञ मानते है कि भारतीय कला को गगनेन्द्रनाथ का महत्वपूर्ण योगदान व्यंग्य चित्रों का निर्माण

* व्याख्याता चित्रकला राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी

ही है। अशोकमित्र की टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है। ''आंग्ल भारतीय जीवन, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, भारतीय बैरिस्टरों के राष्ट्रवाद, सभ्यता की कुंजी के रूप में चरखें पर व्यंग्य उतना ही गहरा था, जितना तीखा। सामान्यतया व्यंग्य चित्र स्मृति पर स्थायी छाप नहीं छोड़ताः सुबह आप जो व्यंग्य चित्र देखते है, उसे शाम तक पूरी तरह भूल जाते है। लेकिन गगनेन्द्रनाथ का व्यंग्य चित्र एक सर्जन के नश्तर की तरह काम करता थाः यह विष्व निकालते समय अपना स्थायी चिह्न छोड़ जाता है।''

गगनेन्द्रनाथ के व्यंग्य चित्र उनके अन्य कार्यों की भावमुद्रा का संदर्भ के बिना ही अपने में विचारणीय है। इसमें संवेगात्मक प्रतिक्रिया के लेवल स्पष्ट रूप से अनुभव कराते हैं व्यंग्य चित्र एक अद्भुत स्त्रोत एवं मौलिकता का प्रदर्शन करते हैं। उनके व्यंग्य चित्र छपने के समय ही सर्वश्रेष्ठ नहीं थे बल्कि आज भी है। नैतिक दृष्टि से निर्णय करने पर अपनी दृष्टि में सभी कार्टूनों का कार्यकाल 19वीं शताब्दी के उदारवादिता के अंतिम बीस वर्ष आते हैं। सभी व्यंग्य चित्र अपने अस्तित्व की प्रकृति के अनुसार सीमित है फिर भी उनमें से कुछ उच्च चेतना जिससे अपने सुखांत सुखाय के कारण स्थायित्त्व को निश्चित करते हैं। यह घाषणा करना कठिन है कि गगन बाबू के व्यंग्य चित्र व्यंग्यात्मक एवं शिक्षाप्रद गुण से ऊँचे उठकर सुखांत भूमि तक पहुँचते हैं। विशेषतः उनके मानव आकृति एवं स्थान सम्बन्धी व्यंग्य चित्र के विषय में यह कहा जा सकता है कि उनका निश्चित रूप से महत्त्व है जो समय, स्थान और व्यक्तिगत संपर्कों से स्वतंत्र है। गगन बाबू के उत्कृष्ट व्यंग्य चित्र जो चर्चा के विषय हैं।

(1)

1. "Wholesale dissemination of knowledge"- इस क्षेत्र में एक विदूषक अपने हाथ में एक स्याही का पेन लेकर विश्वकोश व इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में प्रवेश कराता है, इसमें प्रवेश कराते ही एक धारा निकलती है इस धारा से प्रवासी, नवभारत, मानसी, यमुना, सारथी, शांतिनिकेतन आदि नये साहित्य छोटी – छोटी ऐतिहासिक कहानियाँ घुलकर मुख्य छिद्र में पहुंच जाते है। उससे एक विशेष संक्रामक दुर्गंध निकलती है। जो आकाश में कालिमा के रूप में छा जाती है।

(2)

2. "The temple priest sells his benediction"- इसमें धार्मिकता के ऊपर करारा व्यंग्य किया गया है। साधारणतया बंगाल में स्त्रियाँ अपने विश्वास और वफादारी की शिकार हो गई है, वह बेईमान पुजारी के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति पर बलि चढ़ गई हैं। नगद दाम प्राप्त करके पर्दानसीन बंगाली महिलाओं को उपदेश देता है। हाथ में रूपये का अर्थ सिर्फ ठगना है धार्मिक विवेक नहीं है। यहाँ पुजारी धन के बदले में धर्मोपदेश बेचता है। पुजारी को अपने हाथ द्वारा स्त्री को आशीर्वाद देते दर्शाया है। सामने दो स्त्रियाँ हाथ जोड़कर अर्चना कर रही हैं।

(3)

3. "Ekadasi or the day of fast "- इस व्यंग्य चित्र में गगनबाबू ने आडम्बर का बहुत ही धार्मिक चित्रण किया है। इस आडम्बर में हिन्दू और मुस्लिम सरीक हैं, तथा दोनों ही उपवास के दिन वर्जित भोजन का सेवन कर रहे हैं। पीछे के दृश्य में रेस्तरां को सावधानीपूर्वक चित्रित किया है जहाँ पीछे एक हिन्दू ब्राह्मण का समूह बैठकर वर्जित भोजन और पेयजल का सेवन कर रहे है जिसका वितरण एक मुसलमान लड़का (होटल का नौकर) कर रहा है। इस चित्र को गोल तूलिका से चित्रित किया गया है।

(4)

4. "The expulsion"- इस व्यंग्य चित्र में गगनबाबू ने विराष्ट्रीयकृत भारतीयों के एक समूह का चित्रण किया है जो क्लब के सदस्यों की दकियानुसी से दूर भागते हैं या पीछे हटते हैं जिन्होंने यूरोपीय लिबास और यूरोपीय आदतों को अपनाने से इनकार कर दिया है। विकासशील भारतीयों ने सभी प्रकार के दकियानुसी हथियार जैसे छड़ी, गेंदें और हाथ बरमा से पीछा कर रहे हैं।

(5)

5. "Chemical scream out demand spot out"- इसमें स्वदेशी आन्दोलन के समय बंगाल में बहुत से प्रयोग हुए, नये उद्योग खुले। जैसे– साबुन उद्योग, स्याही उद्योग और अन्य। गगन बाबू ने यहाँ डी.पी.सी. राय के व्यंग्योक्ति को चित्रित करते हुए कहा है कि इन्होंने अत्यधिक कोशिश के बावजूद स्याही बनाने में कामयाबी हासिल की। इसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक को त्रिनेत्र के रूप में चित्रित किया है।

(6)

6. "The sorrow of king Dashratha"- इस व्यंग्य चित्र में रामायण की कहानी का असंगत रूप से प्रस्तुतीकरण किया गया है। यहाँ राजा दशरथ यूरोपीय कोट पहने रंगमंच के सामने खड़े हैं। पास में ही पारिवारिक पुजारी वशिष्ठ खड़े है जिनकी लम्बी सफेद दाढ़ी है तथा व्याकुल राजा को सान्त्वना दे रहे हैं।

(7)

7. "The modern merriage in Bengal"- इसमें सामाजिक विवाह व दहेज का मार्मिक चित्रण किया गया है। पहली पत्नी की मृत्यु के उपरान्त एक अंग्रेजी पद्धति के द्वारा पढ़े लिखे लड़के के लिए माँ एक अनपढ़ लड़की पसन्द करती है जो बहुत सारा दहेज अपने साथ लाती है जो उसकी अशिक्षा का मुआवजा है। लड़का स्वछन्ता प्रेमी है तथा रोमियों जूलियट नामक किताब पर हाथ रखे झुका है सपने रोमियो जैसे है। इस किताब के ऊपर सैनिकों के द्वारा प्रयोग किये जाने वाला टोप रखा है, तितली विवाह के संदेशवाहक का चिन्ह है जो पूर्वपत्नी के मृत शरीर के ठंडे होने से पूर्व की नयी शादी की व्यवस्था का जीता जागता चित्रण किया है।

8. "Seting fire to the University"- इस व्यंग्य चित्र में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को किताबों में आग लगाने का प्रयत्न करते दिखाया जा रहा है तथा विश्वविद्यालय का बहिष्कार करते इस चित्र में हम श्रीमान् सी. आर. को चश्मा पहने व सिगार पीते आसानी से पहचान सकते हैं। यहाँ गगन बाबू ने कुछ महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ लिखी हैं।

"Tomar Bachane Anek Bale Kaje Kichhu Tar Nahika Fale."

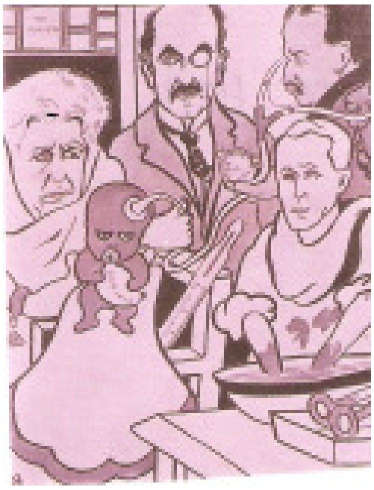

9. "Naba Janm - astami"- इसमें बजट की कमी के कारण एक मृत एनीमिक बच्चा पैदा हुआ है, यहाँ कलाकार के द्वारा मृतनवजात को बजट की कमी को सूचक माना है। जिसे बायसराय साँस द्वारा जीवित करने की कोशिश करते दिखायी दे रहे हैं। एकचश्मी चेहरे वाली आकृति उस समय के बायसराय की है व अन्य दो आकृतियाँ उसके मंत्रियों की जो यूरोपियन लिबास में हैं। श्रीमान् बेसेन्ट नव संवैधानिक में निंदक की तरह देखे जा रहे हैं।

10. "The new education"- इस व्यंग्य कृति में गगनबाबू ने नवीन शिक्षा का बहुत ही हास्यास्पद रूप प्रस्तुत किया है। पुरातन पद्धति का अध्यापक नवीन अंग्रेजी पद्धति के सिद्धांतों को पढ़ा रहा है पढ़ने वाले छात्रों के सिर पर चुटियाँ हैं। स्कूल श्यामपट पर नवीन नैतिक सिद्धांत इस प्रकार लिखे हैं। ''कभी सच नहीं बोलो जो सच बोलता है सभी उससे घृणा करते हैं, तुम्हें कभी सच नहीं बोलना चाहिए ना ही सच्चा बनना चाहिए।'' स्कूल में आए निरीक्षक इस बात का निरीक्षण कर रहे हैं दो कृतियाँ अग्रभूमि में चित्रित हैं जो कोट पहने हैं तथा सिर पर (पूँछ) चोटी लगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुर्टू शचीरानी – कला के प्रणेता– दिल्ली। 2. राय क्षितिज – गगनेन्द्रनाथ टैगोर–कन्टेम्पोरेरी इंडियन आर्ट सीरीज, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली 1964 3. परिमू रतन – 6 पेंटिंग्स ऑफ थ्री टैगोर्स बड़ौदा पृ. सं. 47 4. अग्रवाल, आर.ए.–कलाविलास–मेरठ 1988 5. मित्र अशोक–चार चित्रकार, दिल्ली 1975 6. सक्सैना, एस.एन.–भारतीय चित्रकला–कानपुर 1989